Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

परशुराम शुक्ल के कथा साहित्य में पर्यावरण एक अनुशीलन

राजेश कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
डॉ० राजेन्द्र सिंह
आचार्य, हिन्दी–विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

पर्यावरण का सीधा संबध प्रकृति से है। आज पर्यावरण एक जरूरी सवाल ही नहीं बल्कि ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है लेकिन आज लोगों में इसे लेकर कोई जागरूकता नहीं है। परिणामस्वरूप पर्यावरण सुरक्षा महज एक सरकारी एजेण्डा ही बनकर रह गया है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोष ने पर्यावरण के स्वरूप को परिभाषित करते हुए कहा है कि वह प्राकृतिक संसार जो भूमि– वायु और जमीन के बीच अंतरसंबंधों के साथ–साथ अन्य जीवों, पौधो सूक्ष्म जीवों और संपदाओं के बीच अंर्तसंबंधों को सम्मिलित किए रहता है।

आज के नैनिहाल कल के सुनहरे राष्ट्र की धरोहर है। हिन्दी बाल कविता के माध्यम से बच्चों का उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए आधार तैयार होता है। मनुष्य का प्रकृति से, अनोदिकाल से संबंध रहा है। मनुष्य ने अपना सारा उत्कर्ष प्रकृति के गोद में ही पाया है। प्राकृति का हरा–भरा मनमोहक सुखदायी रूप प्रत्येक प्राणी के मन को मोहित कर लेता है। प्रकृति हमें भीषण गर्मी, वर्षा एवं शीत ऋतु में अपने उपकारों से उत्कर्ष करती है। वृक्ष कभी कुछ नहीं लेते सदैव देते ही रहते हैं। धरती माँ के अनगिनत उपकार है हमारे ऊपर, बदले में कुछ नहीं लेती। धरी माँ प्रकृति पर्यावरण को हरा–भरा रखकर अनेक रत्न उगलती है इसलिये पृथ्वी को रत्नगर्भा कहा गया है। वन खेतों से सोना उगलती है वह किसी से ऊँच–नीच का भेदभाव किये बिना समाज भाव से सभी वन कल्याण चाहती है। हमारा धरती माँ के प्रति कर्तय भी है कि उसे इस हरा–भरा अभिसिंचित रखें एवं धरती माँ को विखण्डित और प्रदूषित होने से बचाएँ। प्रकृति में पशु–पक्षियों वन जीवों का भी पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण में अमूल्य योगदान रहा है।

मानव जीवन के आसपास प्राकृतिक उपादानों का जो घेरा या आवरण है. उसे पर्यावरण कहते हैं। हमारे आसपास के पर्यावरण में पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और मानवीय क्रियाकलाप आते हैं। इन सभी चीजों को दुरुस्त और शाफ सुथरा रखकर ही मानव जीवन स्वस्थ और खुशहाल रह राकता है। वैज्ञानिकों और विद्वानों ने प्रदूषण को तीन प्रमुख मागों में बाँटा है– 1. जल प्रदूषण 2 चल प्रदूषण या मृदा प्रदूषण वायु

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

प्रदूषण। आधुनिक भौतिकतावादी युग इसमें कई प्रकार के प्रदूषण भी शामिल हो गये हैं। जैसे ध्वनि प्रदूषण रेडियोएक्टिव प्रदूषण, रासायनिक प्रदूषण आदि।

डॉ० परशुराम शुक्ल ने बच्चों को मनोरंजन और नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिये बाल उपन्यास और कहानियों लिखी है। इनके द्वारा लिखे गये उपन्यासों और कहानियों में प्राकृतिक परिवेश का चित्रण प्रसंगवश आया है। कहीं जा रही बालोपयोगी कथा को विस्तार देने के लिये प्रकृति को सहयोगी तत्व के रूप में दिखाया गया है। इन्होंने इन कथापरक रचनाओं में पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा अप्रत्यक्ष रूप में दी है। इन्होंने प्रकृति के परिवेश का चित्रण मनुष्य और समाज के जीवन के लिये उपयोगी रूप में किया है।

सुनहरी परी और राजकुमार उपन्यास में अनेक स्थलों पर प्राकृतिक पर्यावरण का उल्लेख हुआ है। राजकुमार रोहन अपने पिता को स्वस्थ करने के लिये सुनहरी मणि की खोज में गया। उसे पशु पक्षी मछली, वन प्रदेश आदि से जो सहायता मिलने का चित्रण लेखक ने किया है, उससे प्रतीत होता है कि हमें पर्यावरण का संरक्षण करना चाहिये।

राजकुमार रोहन को घने और भयानक जंगल से पार कराने में एक हिरण ने मदद की थी हिरन जंगलों में आडे तिरछे रास्तों पर तेजी से छलांग भर रहा था। उसकी गति इतनी तीव्र थी कि यदि रोहन ने सींग न पकडे होते तो वह गिर जाता। कुछ देर में अत्यन्त घना जंगल आरम्भ हो गया। चारों ओर से विचित्र डरावनी आवाजें आ रहीं थीं. किन्तु हिरन की चाल में कोई अन्तर नहीं पड़ा। दोपहर होने से पूर्व उसने राजकुमार रोहन को जंगल के पार पहुंचा दिया।

इसी प्रकार से इस उपन्यास में विचित्र पक्षी, नीली गछली, नदी तालाय, वन प्रदेश, पहाड इत्यादि से संबंधित्त प्राकृतिक परिवेश का चित्रण किया गया है।

'लाल किरण उपन्यास खतरनाक वैज्ञानिक आविष्कारों पर आधारित है इसमें लाल किरण जैसे घातक गैसीय आविष्कार और प्रयोग से होनेवाले पर्यावरणीय प्रदूषण का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार के घातक पर्यावरणीय प्रदूषण को रोकने के लिये आज कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। लाल किरण जैसे गैसीय प्रदूषण के संबंध में निम्न उदाहरण से अनुमान लगाया जा सकता है– इस समय विजय के पास अपनी सुरक्षा के लिये दो रिवॉल्वर थे। एक तो वह रिवॉल्वर था जो उसने अप सिक्सटीन से छीना था और दूसरा..... दूसरे की याद आते ही उसका आत्मविश्वास सौ गुना बढ़ गया। दूसरा रमन का गैस पिस्टल था, जिससे निकलने वाली लाल किरणें क्षण भर में ही प्रलय मचा सकती थी।'

'लाल किरण' उपन्यास में वैज्ञानिक आविष्कारों की श्रेष्ठता दर्शाई गई है। इस उपन्यास में पर्यावरण का चित्रण सामान्य दृष्टि से नहीं किया गया, बल्कि ऊँची श्रेणी के लोगों के जीवन को आधार बनाया गया है, जिनके लिये सभी प्रकार के मौसम और पर्यावरण में रहना आसान

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

होता है 'वातावरण में काफी ठण्डक थी। शायद कुछ देर पहले टापू पर पानी बरसा था। राजेश और विजय दोनों ही पैन्ट शर्ट में थे और ऊपर से उन्होंने लबादा पहन रखा था। राजेश को हाथों में सर्दी लग रही थी, लेकिन उसका शरीर गर्म था। इसका यही मतलब था कि लवादे ऐसे कपड़े के बने हुये थे जो सभी मौसमों में पहने जा सकते थे तथा जिन पर सर्दी–गर्मी का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता था।'

पर्यावरण का वर्णन चीकू और दुष्ट भेड़िया' बाल कहानी संग्रह में अच्छा किया गया है। चीकू खरगोश का नाम है। चीकू और अन्य खरगोश मुलायम घासवाले घने जंगल में रहते हैं वहाँ पर दुष्ट भेडिया खरगोशों का शिकार करता है। उन्हें मार डालता है और खा जाता है। मेडिए का नाम लालू है। उसका आतंक पूरे जंगल में है। वन के पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए, निरीह जीवी की रक्षा के लिए खरगोशों ने योजना बनाई। डी. शुक्ल ने प्रेरणा दी है कि जब पशु अपने अस्तित्व और पर्यावरण की रक्षा के लिए कुछ न कुछ करते हैं तो मनुष्य को भी पर्यावरण का संरक्षण करना चाहिए।

चालाक चीकू और दुष्ट भेडिया संग्रह की अन्य बाल कहानियों में भी पर्यावरण के बारे अच्छा वर्णन किया गया है। उल्लू की सीख में वन के वृक्षों और हरे भरे खुशनुमा माहौल का वर्णन हुआ है। मुनमुन और मोनू बाल कहानी में मुनमुन नाम का बया पक्षी सुन्दर घोंसला बनाती है– घने जंगल में मुनमुन बया रहती थी। उसने न जाने कहाँ से घास–फूस और तिनके लाकर अपना घौसला तैयार किया। मुनमुन एक कुशल कारीगर चिड़िया थी। उसने एक–एक तिनके को इस तरह एक दूसरे में फंसाकर घोंसला बनाया था कि विश्वास ही नहीं होता था कि यह एक चिडिया का घोंसला है। 'गिलहरी की पूँछ, चालक सियार 'सरस्वती का श्राप तथा चुगलखोर का अंत' आदि कहानियों में भी प्राकृक्तिक परिवेश की रम्यता तथा पशु–पक्षियों आदि का वर्णन करके डॉ. परशुराम शुक्ल ने पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा दी है।

डॉ० परशुराम शुक्ल ने कुछ कहानियों में पर्यावरण प्रदूषण की घटना का उल्लेख करते हुए पर्यावरण को सुधारने और संरक्षण देने का भी वर्णन किया है। पौराणिक युग में आज की तरह गैसीय प्रदूषण नहीं थे, परन्तु प्राकृतिक प्रकोप के कारण ऐसी स्थितियों उत्पन्न हो जाती थीं। 'क्रोध का कीड़ा कहानी संग्रह की 'विष्णु का वाहन गरुड़' में गरुड़ जब अम्रत कलश लेने के लिए इन्द्रलोक में पहुँचते है तो प्राकृतिक उथल–पुथल मचा देते हैं– ''गरुड़ के पहुँचते ही स्वर्गलोक में हाहाकार मच गया, तूफानी हवायें चलने लगीं। विशाल पर्वत थर–थर काँपने लगे. बड़े–बडे पेड़ टूटकर गिरने लगे, नदियों की धाराएँ बदल गई। स्वर्ग की यह स्थिति देखकर देवराज इन्द्र वृहस्पति के पास गए और उनसे इसका कारण पूछा गरुड ने अपने पंखों से इतनी धूल पैदा कर दी कि चारों और अंधेरा छा गया और देवताओं को

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

दिखाई देना बन्द हो गया, किन्तु तभी इन्द्र के आदेश पर वायु ने प्रचण्ड रूप धारण किया और धूल को उड़ा दिया।

पौराणिक पौराणिक कथाओं में अधिकतर देवताओं को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करते हुए दर्शाया गया है। अपनी समृद्धि के लिए उपाय करते हुए जब पर्यावरण प्रदूषित होने लगता था तो देवराज इन्द्र अपनी शक्तियों का प्रयोग कर पर्यावरण के संरक्षण का उपाय करते थे।

डॉ० परशुराम शुक्ल द्वारा लोक कथाएँ शीर्षक से भारत के महत्वपूर्ण वृक्षों पर कथाएँ लिखी गई हैं। इन कहानियों में लेखक ने पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित चिंतन भी प्रस्तुत किया है। सुगन्धित पदार्थों का प्रयोग पर्यावरण की खुशनुमा बनाने के लिए किया जाता है। यह कार्य भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी किया जाता है। 'लोक कथाएँ में अगर वृक्ष का वर्णन करते हुए लेखक ने उसका प्रयोग पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जाने का उल्लेख भी किया है– सुगन्ध से मानव आत्मा का सर्वोच्च स्तर तक विकास होता है. यही कारण है कि इन उत्सवों में जापान के लोग खुलकर अगर और चन्दन का उपयोग करते हैं। जापान में अगर का उपयोग इसे जलाकर सुगन्ध फैलाने के लिए किया जाता है। यहाँ बौद्ध मंदिर में प्रतिदिन तथा उत्सवों के समय विशेष रूप से अगर का उपयोग या पाउडर अगरबत्ती में किया जाता है। धीरे–धीरे अगर पूरे जापान में लोकप्रिय हो गया है।

अपने आसपास के पर्यावरण को संशोधित और सुगन्धित करने के लिये अगर की लकड़ी और उसकी छाल का उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत संग्रह की अन्य अनेक लोक कथाओं में पर्यावरण संरक्षण संबंधी विचार व्यक्त किये गये हैं। गैंमार वृक्ष की लेखक ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उपयोगी और महत्वपूर्ण बतलाया है "गॅभार वृक्ष पर्यावरण की सुरक्षा करने के साथ ही लोगों को रोजगार भी प्रदान करता है। इस वृक्ष के सभी अंग उपयोगी होते हैं एवं इनका किसी न किसी रूप में व्यावसायिक महत्व है। गैंभार की पत्तियों पशुओं का अच्छा चारा है। इसके साथ ही इसकी पत्तियों और जड़ों से विभिन्न प्रकार के रोगों की औषधियाँ भी तैयार की जाती हैं।"

गंभार की तरह ही 'मिदुर वृक्ष की विशेषताओं का उल्लेख करते हुये लेखक ने भिदुर को भी न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण बतलाया है, बल्कि इसे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में भी उपयोगी सिद्ध किया है– ''सामान्यतया सभी वृक्षों की पर्यावरण संतुलन बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के साथ ही मिट्टी को उपजाऊ बनाने और भूक्षरण को रोकने का कार्य भी करते हैं। शोध के अनुसार भिदुर के वृक्ष की आयु के साथ–साथ आसपास की भूमि में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती जाती

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

है। अर्थात् वृक्ष जितने समय तक जीवित रहता है, भूमि को नाइट्रोजन देता रहता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण यह वृक्ष विश्वविख्यात हो गया है।''

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि डॉ. परशुराम शुक्ल के उपन्यासों और कहानियों में पर्यावरण संरक्षण पर पर्याप्त वर्णन किया गया है। यह वर्णन बालकों, किशोरों और युवाओं को पर्यावरण संरक्षण संबंधी मार्गदर्शन के लिये बहुत उपयोगी है। भविष्य में बालकों को प्रदूषित वातावरण से जूझने के लिये बालपन में पढी ये कहानियाँ प्रेरणास्पद होगी। बालमन कोमल होता है उसे बचपन में यदि यह सब पता हो जाये तो वे वृक्ष मिट्टी, जल प्रदूषण से बचने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

सन्दर्भ

1. परशुराम शुक्ल, सुनहरी परी और राजकुमार, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 1989.
2. परशुराम शुक्ल, लाल किरण, विज्ञान लोक, दिल्ली, 2013.
3. परशुराम शुक्ल, लाल किरण, विज्ञान लोक, दिल्ली, 2013.
4. परशुराम शुक्ल, चालाक चीकू और दुष्ट भेडिया, लोक वाणी संस्थान, दिल्ली, सन् 2011.
5. परशुराम शुक्ल, क्रोध का कीडा, श्रेया प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009.
6. परशुराम शुक्ल, भारत के महत्वपूर्ण वृक्ष, सोनू पब्लिकेशन, जयपुर 2009.
7. परशुराम शुक्ल, भारत के महत्वपूर्ण वृक्ष, सोनू पब्लिकेशन, जयपुर 2009.
8. परशुराम शुक्ल, भारत के महत्वपूर्ण वृक्ष, सोनू पब्लिकेशन, जयपुर 2009.